(श्रीमती सरला माहेश्वरी)

महोदया, आनन्दमूर्ति ने यह घोषणा की—"मनुष्यों की समानता के लिए आनन्द-मार्ग हिंसा का रास्ता अपनाएगा"। उन्होंने एक वालांटियर सोशल सर्विस का गठन किया, जो विभिन्न स्थानों पर गुप्त परेड करती थी और खुफिया आम स्वयं सेवकों को नरहत्या तथा हिंसात्मक कार्यक्रमों की ट्रेनिंग दी जाती थी। वर्ष 1970 में पटना स्टेशन पर उन्होंने ज्योति बसु पर गोली चलाई। ज्योति बसु बाल-बाल बच गए, लेकिन पार्टी के एक साथी इमाम अली मारे गए। उसी वर्ष सी०बी०आई० ने रांची में आनन्दमार्ग के सदर दफ्तर की तलाशी ली और वहां से बहुत से अस्त्र-शस्त्र तथा आदमियों की खोपड़ियां बरामद कीं।

उन्हीं दिनों प्रभात रंजन सरकार की पत्नी जो आनन्दमीं के नाम से प्रसिद्ध थी और उनके बेटे ने आनन्दमार्ग को छोड़ दिया और जनता के सामने इस संगठन के अपराध-मूलक कार्यक्रमों का खुलासा करते हुए यह कहा कि जो अवधूत आनन्दमार्ग छोड़ देते हैं, उनकी हत्या कर दी जाती है। इसी वर्ष आनन्दमूर्ति गिरफ्तार किए गए और सात वर्षों तक जेल में रहे।

आनन्दमार्गियों ने अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिए प्राउटिस्ट ब्लाक आफ इंडिया तथा आमरा बंगाली नाम से दो संगठन बनाए और क्रमशः बिहार तथा पश्चिम बंगाल से चुनाव लड़ा।

1978 हमें प्रभात रंजन सरकार ने जेल से रिहा होने के बाद कलकत्ता में एक धर्म महाचक्र का अनुष्ठान किया। इस कार्यक्रम में 25 फीसदी लोग विदेशी थे। इस धर्ममहाचक्र की जो रिपोर्ट पेश की गई, उसमें यह पता चलता है कि तब कुल 97 देशों में आनन्दमार्ग की शाखायें थीं। अब यह संख्या 110 से भी अधिक हो गई है।

पिछले दिनों जो तथ्य सामने आये हैं उनसे यह भी पता चला कि इन्होंने अमरीका में तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की हत्या करने की साजिश की थी।

इनके आमरा बंगाली संगठन से तो तमाम लोग परिचित हैं ही। यह चाहता है कि बंगाल से सभी गैर बंगालियों को निकाल बाहर किया जाए और इसी उद्देश्य से यह घिनौना प्रचार भी चलाता रहता है।

हमारे लिए हैरत की बात है कि एक ऐसे राष्ट्रद्रोही संगठन को, जिसकी हिंसक और अलगाववादी गतिविधियां हमारी सरकार से भी छिपी हुई नहीं हैं, उस संगठन को संयुक्त राष्ट्र संघ से एक गैर-सरकारी राहतकारी संगठन के रूप में मान्यता दी गई है। आनन्द-मार्गियों के साथ भारत विरोधी शक्तियों का संबंध सर्वव्यापी है, सर्वविदित है, उसे देखते हुए यह आश्चर्य तो नहीं होता कि आनन्दमार्ग किस तरह से संयुक्त राष्ट्र संघ की स्वीकृति हासिल करने में सफल हुआ है, लेकिन तमाम देशभक्तों को इस बात पर जरूर आश्चर्य होता है।

इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से और इस सदन से अपील करना चाहूंगी कि हमारी सरकार इस मामले की गंभीरता को समझते हुए, आज एक अराजकतावाद और आतंकवाद के खिलाफ पूरे विश्व में एक चेतना सी जग रही है, उस समय इस प्रकार के एक आतंकवादी, पृथकतावादी संगठन को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता दिया जाना निःसंदेह हमारे देश की एकता और अखंडता के लिए बहुत खतरनाक हो सकता है। इसलिए मैं चाहूंगी कि सरकार इस मामले को गंभीरता से ले और संयुक्त राष्ट्र संघ को अपने निर्णय को बदलने की पेशकश करे।

Air pollution due to poisonous gases erupting from Industrial Unit at Mohali, Chandigarh

श्री भूपेन्द्र सिंह मान (नाम-निर्देशित): अभी भोपाल गैस त्रासदी की चीखें चिल्लाहटें हमें भूली नहीं हैं। भोपाल में जो कुछ हुआ, अभी तक सभी के

मनों में याद है और जहां भी लोगों की आबादी रहती है और वहां ऐसी गैसिज आती हों, तो इसके लिए सरकार को बहुत गंभीरता से देखने की जरूरत है ।

चंडीगढ़ दो स्टेट्स की राजधानी है और चंडीगढ़ की एक्सटेंशन दो जगह पर है--पंचकूला और मोहाली । मोहाली में काफी आबादी रहती है । और वहां इंडिस्ट्रियल एरियाज भी है । इंडस्ट्रियल प्लॉट्स से कई बार इतनी जहरीली, बदबूदार गैस निकलती है कि लोगों का वहां जीना मुहाल होता है, वहां रहना मुहाल होता है । कई बार कम्प्लेंट्स की जा चुकी है, लोगों ने इसके ऊपर रोष भी जाहिर किया है, लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ है । लगता यह है कि जो फैक्टरीज यह गैसिज छोड़ रही हैं, वे उसको रोकने में असमर्थ हैं और जो वहां अधिकारी हैं, उनको कुछ न कुछ देकर, उनका मुंह बंद करके वे अपना काम जारी रखे हुए हैं । यह बहुत गंभीर मसला है ।

इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से यह अनुरोध करूंगा कि वह इस बात को गंभीरता से ले । लोगों की जान और माल की रक्षा और एन्वायरन्मेंट की रक्षा करने के काम को गंभीरता से लिया जाना चाहिए । इसके साथ ही साथ जो एन्वायरन्मेंट में, जो हवा के साथ-साथ खाने की पाल्युशन हो रही है, उसका भी ध्यान रखना चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं ।

Suicide committed by a student of the Central School, Tagore Garden, New Delhi,, due to alleged harassment by the principal of that school

श्री सैयद सिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश) : मैडम, आज पूरी दुनिया के अंदर जब हम दुनिया के कमजोर और सताए हुए लोगों की लिस्ट बनाते हैं तो उसमें महिलाएं, बालक व बालिकाएं, मैं समझता हूं कि सबसे ऊपर आती हैं । आज दुनिया में एक मांग चली है कि बच्चों और बालकों के अधिकार को संरक्षण दिया जाना चाहिए; लेकिन अपने देश में ही क्या, दुनिया के तरक्की किए हुए जो देश हैं वहां भी महिलाएं और बच्चे वरीयता की लिस्ट में, प्रियारिटीज की लिस्ट में सबसे नीचे आते हैं।

महोदया, आप जैसा जानती हैं कि बच्चों का गुलामी की तरह का पुराना व्यापार भी आज हो रहा है और गरीब देशों से बच्चे किसी न किसी तरह से बाहर जो सपन्न देश हैं, जो काफी तरक्की किये हुये देश हैं या किसी तरह से वहां दौलत बहुत है, वहां हमारे बच्चे भी भेजे जाते हैं । हमारी तीसरी दुनिया के बच्चे किसी न किसी सूरत में वहां के धनाढ्य और जो वहां अच्छी हैसियत के लोग हैं उनकी खिदमत करने के लिये भेजे जाते हैं।

यह सब तो है, लेकिन इसके साथ-साथ अगर हम स्कूल जगत में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार की किसी भी घटना को देखते हैं तो उससे हमारा दिल दहल जाता है और लगता है कि वाकई में हम पढ़े-लिखे जगत के अन्दर भी बच्चों को अब भी उनका हक नहीं दे सके हैं । अभी-अभी हमारे शहर दिल्ली में एक सैंट्रल स्कूल के एक छात्र ने 14 नवम्बर को आत्महत्या की है । 14 नवम्बर जबकि सारे देश के अन्दर बाल दिवस मनाया जा रहा था, इस परिपेक्ष्य में भी हम देखें तो यह घटना बहुत ही महत्वपूर्ण और हृदय-विदारक हो जाती है । जवाहर लाल नेहरू जी को बच्चों से कितना प्यार था, वह उनकी मन-मस्तिष्क से तो संबंध था ही, लेकिन इसी के साथ-साथ वह समझते थे कि बच्चों को संरक्षण देने का, उनकी सेंसेटिवनैस और उनकी संवेदनशीलता को समझने का मतलब यह है कि हम भारत की नयी पीढ़ी को तैयार कर रहे हैं—एक ऐसी पीढ़ी जो भारत की जिम्मेदारी अपने कंधों पर मजबूती से उठा सके । हमारे राजनेता हों या हमारे सामाजिक कार्यकर्ता हों उन सबके भाषण ज्यादातर